**वार्तालाप-633, दिनांक 21.09.08, सतना-1**
**Disc.CD No.633, dated 21.09.08, Satna-1**

**समयः 00.08-16.55**

**जिज्ञासुः** बाबा नाग और इच्छाधारी होते हैं। वो कैसे होते हैं?

**दूसरा जिज्ञासुः** इच्छाधारी होते है नाग, नागिन।

**बाबाः** अरे, सर्प, नाग होते हैं, इच्छाधारी नाग होते हैं - ये मनुष्यों की बात है, जो सर्प की तरह कर्म करने वाले हैं, विषैले हैं; उनकी बात है या जानवर सर्पों की बात है? तो ऐसे ह्यूमन सर्प ब्राह्मणों की दुनिया में ही बैठे हुए हैं, जो शंकर के गले का हार बनते हैं। शंकर को सर्प लिपटे हुए दिखाए जाते हैं ना। इसलिए गायन है चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग। वो परम हंस का पार्ट है, हीरो पार्टधारी का पार्ट है जिसके वातावरण में चारों ओर सर्प ही सर्प रहते हैं। परन्तु बड़ी मस्ती में रहता है, ध्यान मुद्रा में। विष्णु को भी शेषशायी दिखाते हैं। कहाँ आराम से सोया हुआ है? सर्पों की शैया पर सोया हुआ है। नहीं तो बिस्तर में सर्प घुस जाएगा, कोई देख ले तो आधे तो प्राण निकल जाएंगे।

**Time: 00.08-16.55**
**Student:** Baba, there are *icchaadhaari* snakes[1] . How are they so?
**Another student:** The snakes are *icchaadhaari*.
**Baba:** *Arey*, there are snakes, cobras, *icchaadhaari* snakes; is it about the human beings who are poisonous, who perform poisonous acts like snakes or is it about the animal snakes? So, such human snakes are sitting in this very world of Brahmins who become garlands around the neck of Shankar. Snakes are shown to be clung to Shankar, aren't they? This is why it is famous: *candan vish vyaapat nahi lipte rahat bhujang* (although snakes remain clung to the sandalwood tree, it does not become poisonous). It is the *part* of the Supreme Soul (*param hans*), it is the *part* of the *hero* actor; snakes and only snakes live around him. But he remains in his own intoxication in a meditative posture (*dhyaan mudra*). Vishnu is also shown to be sleeping on a snake bed (*sheshshaiyaa*). Where is he sleeping comfortably? He is sleeping on a bed of snakes. Otherwise, if a snake creeps in the bed and someone sees it, then he will be half dead on seeing it.

शास्त्रों में जो भी बातें आई हुई हैं, उनका अर्थ स्वयं परमपिता परमात्मा आकरके बताते हैं शास्त्रों का सार ब्रह्मा के द्वारा। इसलिए ब्रह्मा के मुख से जो सार स्वरूप वाणी निकलती है वो वेदवाणी कही जाती है। सबसे पुराने ते पुराने शास्त्र कौन हैं? वेद। विद माना जानकारी। जानकारी का भण्डार है परमात्मा की वाणी। परन्तु उसके अर्थ को जो विकारी मनुष्य हैं उन्होंने शास्त्र लिख-लिखकरके विकृत कर दिया। जो-जो शास्त्रकार आए वो मनुष्य ही थे या भगवान थे? देवता नहीं थे। शास्त्रों की भी ढ़ाई हज़ार साल की हिस्ट्री मिल रही है। पहले-पहले शास्त्र भी सतोप्रधान थे। दुनिया की हर चीज़ पहले सतोप्रधान होती है, फिर तमोप्रधान होती है। तो शास्त्रों में जो वैध हैं वेद वो वेदवाणी वास्तव में ब्रह्मा के मुख से सृष्टि के

[1] snakes that are believed to take on a human form as per their wish



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

आदि में निकली है। और सृष्टि का आदि होता ही तब है जब सृष्टि पुरानी तमोप्रधान हो जाती है। पुराने मकान को गिराया जाता है या नए मकान को गिराता है कोई? पुराना मकान गिराया जाता है। बाग भी पुराना हो जाता है तो काट करके नया लगाया जाता है। ऐसे थोड़ेही कि सतयुग में भगवान आ गए, त्रेता में भगवान आ गए, द्वापर में भगवान आ गए, कलियुग में भगवान आ गए क्योंकि शास्त्रों में लिखा हुआ है सम्भवामि युगे-युगे। अरे, ये लिखा किसने? मनुष्य ने लिखा या भगवान ने लिखा?

The Supreme Father Supreme Soul Himself comes and narrates the meanings of all the topics mentioned in the scriptures; He narrates the essence of scriptures through Brahma. This is why the vani (murli) that that is narrated through the mouth of Brahma in the form of essence is called the *Ved vaani.* Which are the oldest scriptures? Ved. *Vid* means information. The vani of the Supreme Soul is a storehouse of information. But the vicious human beings have deformed its meanings by writing scriptures. All the writers of scriptures (*shaastrakaar*) who came, were they human beings or God? They were certainly not deities. The *history* of the scriptures for 2500 years is also available. In the beginning, the scriptures were also *satopradhaan* [2]. Everything in the world is initially *satopradhaan* then, it becomes *tamopradhaan*[3]. So, the Vedas among the scriptures…, that *Ved vaani* actually came out through the mouth of Brahma in the beginning of the world. And the [new] world begins only when this world becomes old and *tamopradhaan*. Is an old house demolished or does anyone demolish a new house? An old house is demolished. When a garden also becomes old, [the plants] are cut and new [plants] are planted in it. It is not that God comes in the Golden Age, in the Silver Age, in the Copper Age and in the Iron Age [just] because it has been written in the scriptures: *sambhavaami yuge yuge* (God comes in every age). *Arey*, who wrote this? Did the human beings write this or did God write this?

कोई भी धरमपिता आता है तो बैठकरके किताब लिखता है या मुँह से डायरेक्ट बोलता है? क्या करता है? मुख से डायरेक्ट बोलता है। बाद में, वर्षों के बाद फिर उसकी बोली हुई वाणी को ग्रंथित किया जाता है ग्रंथों में। जैसे गुरु नानक ने जो कुछ बोला, तो कई वर्षों के बाद गुरु ग्रंथ साहब लिखा गया। क्राइस्ट ने जो कुछ बोला, वो वर्षों के बाद जब उनकी जेनेरेशन बहुत बढ़ गई क्रिश्चियंस की तब बाइबल बना। मोहम्मद ने जो कुछ बोला, जब मुसलमानों की संख्या लाखों की तादाद में हो गई तब कुरान बनाई गई। ऐसे ही भगवान जब आते हैं तो आकरके कोई किताब लिखते नहीं हैं। कोई शास्त्र नहीं लिखते। वो तो मुख से आकरके अपने बच्चों को समझाते हैं। बच्चे कौन? जो ब्राह्मण बच्चे बनते हैं। उनको प्यार से समझाते हैं - बच्चे, तुम एक आत्मा हो, तुम्हारी जाति मनुष्य जाति है। जैसे बीजों की जाति होती है ना। गेहूँ का बीज, बाजरे का बीज, आम का बीज। जैसा बीज होगा वैसा उसका वृक्ष दिखाई पडेगा, बनेगा। ऐसे तुम भी मनुष्य आत्मा हो। ये मनुष्य आत्मा जब गर्भ में प्रवेश होती है तो गर्भ मनुष्य जाति में ही प्रवेश करती है। मनुष्य जाति का गर्भ होता है। ऐसे नहीं कि आम का

[2] Consisting in the quality of goodness and purity
[3] Dominated by darkness and ignorance



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बीज बोया जाएगा तो वो पीपल बन जाएगा। सवाल ही पैदा नहीं होता। उसमें मनुष्य जाति के जन्म-जन्मान्तर के संस्कार हैं।

Whichever religious father comes, does he sit and write a book or does he speak directly through his mouth? What does he do? He speaks directly through the mouth. Later on, after many years, the words spoken by him are written in books (*granth*). For example, whatever Guru Nanak spoke, it was written after many years later [in the form of] Guru Granth Sahib[4]. Whatever Christ spoke, was made into Bible when the *generation* (population) of the Christians increased a lot after many years. Whatever Mohammad spoke, was made into Koran when the number of Muslims increased to lakhs (hundred thousands). Similarly, when God comes, He does not write any book after coming. He does not write any scripture. In fact, He comes and explains His children through the mouth. Who are the children? Those who become Brahmins, the children. He explains to them lovingly: Children, you are a soul; your species is the species of human beings. For example, there are categories of seeds, aren't there? [There are] the seeds of wheat, seeds of millet (*baajraa*), seeds of mango; as is the seed, so shall be the tree that appears [out of it], that grows from it. Similarly, you are human souls. When this human soul enters the womb, it enters the foetus of a human species itself. It is the foetus of a human species. It is not that if you sow a mango seed, it will grow into a fig tree (*piipal*). This question does not arise at all. It (the human soul) contains the *sanskaars* of human species for many births.

भगवान आवेंगे तो मनुष्य का रूप धारण करके आवेंगे या जानवरों का रूप धारण करके आवेंगे? अरे जानवरों में तो बुद्धि ही नहीं होती है ज्ञान को समझने की। भगवान सृष्टि का उद्धार ज्ञान के आधार पर करता है या कोई आधार बनता है? (सभी ने कहा - ज्ञान।) और ज्ञान मनुष्य ही समझेगा, जिसको मन होगा वो ही मनन-चिंतन-मंथन करके ज्ञान को समझेगा। और जानवरों में तो मन-बुद्धि की ताकत होती ही नहीं। वो ज्ञान को कैसे समझेगा? तो शास्त्रों में जो लिख दिया है वो विकारी मनुष्यों ने लिखा है और शास्त्रों के हज़ारों वर्ष के बाद, सैंकड़ों वर्ष के बाद उनकी व्याख्याएं होती रही। विकारी मनुष्यों के द्वारा। सब मनुष्य जो हैं, जो भी इस सृष्टि पर हुए, देव, देवात्माओं को छोड़करके। इस द्वैतवादी युग से, द्वापरयुग से सभी मनुष्य देह अभिमानी हो गए। आत्मिक स्थिति वाले नहीं रहे। तो देह अभिमानी जो होंगे वो तो स्वार्थी होंगे। स्वार्थ के आधार पर शास्त्र लिखे गए। और इनके अर्थों की जो व्याख्या हुई है वो भी विकृत हो गई।

When God comes, will He take on the form of a human being or will He take on the form of animals when He comes? *Arey*, the animals do not have the intelligence to understand the knowledge at all. Does God bring about the true liberation of the world through knowledge or through something else? (Everyone said: [Through] knowledge.) And it is only a human being who will understand the knowledge. Only the one who has mind will understand the knowledge after thinking and churning. And the animals do not have the power of the mind and intellect at all. How will they understand the knowledge? So, whatever is written in the scriptures, it has been written by the vicious human beings and thousands, hundreds of years after the scriptures were written, their interpretations were made by vicious human beings.

[4] The holy book of Sikhs



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

All the human beings who existed in this world except the deities, the deity souls, became body conscious from the dualistic age, from the Copper Age. They no more remained the ones with a soul conscious stage. So, those who are body conscious will certainly be selfish. The scriptures were written out of selfishness and the explanations of their meanings were also deformed.

भगवान बाप को क्यों आना पड़ता है? इसीलिए आना पड़ता है कि जो ज्ञान जल है, उसकी गति है। जो ऊपर से आएगा वो कहाँ जाएगा? नीचे जाएगा। ऊँच ते ऊँच है भगवान बाप। सृष्टि के आदि में जो ज्ञान देता है वो नीचे उतरते-4 गंदी नदियाँ बन जाता है। कितने शहरों का कचड़ा पड़ता है। और वो कचड़े से प्रदूषण फैलेगा या वातावरण शुद्ध होगा? प्रदूषण फैलता रहता है। ये इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, जितने भी धर्मपिताएं आए, ये पहले-पहले जो ज्ञान सुनाते हैं उसमें भी कुछ सात्विकता होती है। बाद में इनके जो फालोअर्स हैं, इनकी सुनाई हुई बातों का अर्थ का अनर्थ करके धर्म को अधर्म में कनवर्ट कर देते हैं। विधर्मी ही बन जाते हैं। रूस के क्रिश्चियंस की तरह अधर्मी बन जाते हैं। हैं रशियंस भी क्रिश्चियंस परन्तु वो बाइबल को और गिरिजाघर को मानते ही नहीं।

Why does God the Father have to come? He has to come because of this very reason that… the water of knowledge has a direction [of flowing]. When it flows from above, where will it go? It will go downwards. God the Father is the Highest on high. The knowledge that He gives in the beginning of the world falls (degrades) continuously and changes into dirty rivers. The garbage of so many cities is added to it. And will that garbage spread pollution or will the atmosphere become pure? The pollution keeps spreading. All the religious fathers like Abraham, Buddha, Christ who came, there is trueness (*saatviktaa*) to some extent even in the knowledge that they narrate in the beginning. Later on, their *followers* misinterpret the meanings of their words and *convert dharma* (religion) into *adharma* (irreligion). They almost become *vidharmis*[5]. They become irreligious like the Christians of Russia. Even the Russians are Christians, but they do not believe the Bible and Church at all.

तो जैसे दुनिया की हर चीज़ सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है भगवान का सुनाया हुआ ज्ञान भी जब भगवान इस सृष्टि पर प्रैक्टिकल में तीन मूर्तियों में प्रत्यक्ष होता है तो सात्विक होता है। बाद में आत्माओं की बैटरी शरीर के सुख भोगते-भोगते डिस्चार्ज होती रहती है। सतयुग में 16 कला संपूर्ण बैटरी थी आत्मा रूपी । त्रेता में 14 कला संपूर्ण रह जाती है। द्वापर में 8 कला, कलियुग में आते-आते-आते अंत में कलाहीन आत्माएं हो गई। एक भी आत्मा नहीं है जो मनसा वाचा कर्मणा सदैव किसी को सुख देने वाली हो। कोई हो यहाँ बैठा हो तो बोले। सब तमोप्रधान बन जाते हैं। सब आत्मा रूपी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। ताकत ही नहीं रहती। सुख भोगने की भी ताकत नहीं रहती। कहाँ देवताएं 24 घंटे का सुख भोगते थे। आनन्द स्वरूप कहा जाता है। भगवान को तो टाइटिल ही देते हैं सत-चित-आनन्द स्वरूप। सदैव आनन्द में रहने वाला। विष्णु। मंगलम् भगवान विष्णु। सदैव मंगलकारी है। आज कोई आत्मा ये अनुभव करती है कि मैं सदैव मनसा से, मनसा के संकल्पों से, वाचा के

[5] Those whose beliefs and practices are opposite to that set by the Father



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

महावाक्यों से, कर्मेन्द्रियों के कर्मों से सदैव सुख स्वरूप रहता हूँ और दूसरों को सुख ही सुख देता हूँ। एक भी आत्मा इस मनुष्य सृष्टि पर नहीं है। जब मनुष्य ही नहीं है, जो मनुष्य मन-बुद्धि वाला प्राणी है, सबसे जास्ती इन्द्रियां मनुष्य में होती है। जितनी जास्ती इन्द्रियाँ हैं उतना ही ज्यादा सुख और दुख भोग सकता है। जानवरों में उतनी इन्द्रियाँ नहीं होती हैं। तो जानवर न उतना सुख भोगते हैं और न दुःख भोगते हैं।

So, just as everything in the world changes from *satopradhaan* to *tamopradhaan*, the knowledge narrated by God is also true (*saatvik*) when He is revealed in this world through the three personalities in practice. Later on, the *battery* of the souls continues to *discharge* while enjoying the pleasures of the body. The *battery* in the form of soul was complete with 16 celestial degrees in the Golden Age. It remains complete with 14 celestial degrees in the Silver Age. It has eight celestial degrees in the Copper Age [and] by the arrival of the Iron Age, the souls have become devoid of celestial degrees in the end. There is not even a single soul who always gives happiness to others through the thoughts, words and actions. If there is any such person sitting here, he may speak up. Everyone becomes *tamopradhaan*. All the batteries in the form of souls are discharged. There is no power left [in them] at all. It does not have the power to enjoy happiness either. What a difference there is between the deities who used to enjoy happiness for 24 hours [and the human beings today]! They are called *anand swaruup* (embodiment of bliss). God is indeed given the *title* '*Sat-chit-anand swaroop*' (the embodiment of truth, life and bliss). He is Vishnu, the one who always remains happy. [It is said:] *Mangalam Bhagwan Vishnu.* He is always auspicious. Does any soul experience that it is always an embodiment of bliss through the mind, through the thoughts of the mind, through the words of speech, through the actions of the *karmendriyaan*[6] and give happiness and only happiness to others? There is not a single soul [like this] in the human world. When there aren't any human beings like this… human being is a creature with mind and intellect. A human being has the maximum number of *indriyaan*[7] in him. The more the number of *indriyaan* someone has, he can experience happiness and sorrow to that extent. Animals do not have these many *indriyaan*. So, animals neither experience much happiness nor much sorrow.

दुनिया में सागर में, नदियों में कितनी मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। आज दुनिया में खाने के लिए अनाज नहीं पैदा करते हैं लोग। कारखानों वाली दुनिया बन गई है। कारखानों में माल पैदा हो रहा है, पैसा कमाया जा रहा है। खाने-पीने की वस्तुएं तो अब बनाई ही नहीं जा रही है। दुनिया के स्टॉक में अन्न बहुत थोड़ा रह गया है। इसलिए महंगाई बढ़ती जा रही है। तो दुनिया के लोग क्या खाते हैं? ज्यादा पेट किस चीज़ से भरते हैं? मछलियों से। मछलियों में इन्द्रियाँ बहुत कम होती हैं कि मनुष्यों की तरह ज्यादा इन्द्रियाँ होती हैं? इसलिए उनको जब काटते हैं तो उनको दुःख भी कम होता है। और मनुष्य को जब काटा, उंगली भी काटी जाएगी तो? कितना दुःख अनुभव होता है। इस मनुष्य सृष्टि पे मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर सबसे जास्ती सुख भोगता है। देव योनि में सतयुग त्रेता में राम-कृष्ण के राज्य में देवात्माओं ने बहुत सुख भोगा। मनुष्य ही देवता बनते हैं अच्छे कर्म करने

[6] Parts of the body used to perform actions
[7] Parts of the body used to perform actions and the sense organs



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

से। अच्छे कर्म तो भगवान ही आकरके सिखाता है। गीता में भी लिखा हुआ है - मैं कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाता हूँ। कैसे कर्म करना चाहिए, कैसे कर्म नहीं करना चाहिए। अरे सांप जैसे कर्म करोगे तो क्या बनोगे? सांप ही बनोगे ना। तो सांप नहीं बनते हैं। क्या? सांप जैसे मनुष्य बन जाते हैं।

In the world, so many fishes are caught from the ocean, from the rivers. Today, people do not produce grains to eat. It has become a world of factories. Materials are being manufactured in the factories [and] money is earned through it. Eatables and drinks are not at all being produced. The *stock* of grains left in the world is very less. This is why the prices are rising higher. So, what do the people in the world eat? What do they fill their stomach with more? By [eating] fishes. The number of *indriyaan* in fishes is very less; or do they have more *indriyaan* like the human beings have? This is why when they (the fishes) are cut, they experience little sorrow. But what happens when even a finger of a human being is cut? He experiences so much sorrow. Human being is the only living creature in the human world who experiences happiness the most on this world stage, in the divine birth. The deity souls enjoyed a lot of happiness in the Golden and Silver Ages, in the kingdom of Ram and Krishna. The human beings themselves become deities by performing good actions. God alone teaches good actions when He comes. It has been written in Gita as well: I explain the dynamics of *karma* (actions), *akarma* (the actions which don't have any result) and *vikarma* (wrong actions). [I explain:] what kind of actions should be performed and what kind of actions should not be performed. *Arey*, if you perform actions like snake, what will you become? You will certainly become snakes, won't you? So, they do not turn into snakes [in reality]. What? They become snake like human beings.

**समयः 17.00-29.34**

**जिज्ञासुः** बाबा, एक फोटो में हमने देखा है कि जगदम्बा अम्मा जो है वो मुण्डों की गले में माला पहने हुए हैं। (बाबाः हाँ, जी।) और शंकरजी उनकी गोद में पड़े हुए हैं। ये कैसी बात है बाबा?

**बाबाः** वास्तव में परमपिता परमात्मा शिव जब इस सृष्टि पर आते हैं, तो वो पहले-पहले जो वाक्य निकलता है वो ब्रह्मा के द्वारा निकलता है या शंकर के द्वारा निकलता है या विष्णु के द्वारा प्रैक्टिकल कर्म होता है? (जिज्ञासु - ब्रह्मा के द्वारा।) ब्रह्मा द्वारा। और ब्रह्माकुमारियाँ तो दादा लेखराज को ब्रह्मा समझती हैं। लेकिन दादा लेखराज तो ब्रह्मा नहीं है। वो तो टाइटलधारी ब्रह्मा हुए। असली ब्रह्मा तो कोई और था। जिसके मुख से ज्ञान की बात सुनकर के पहला ब्राह्मण तैयार हुआ दुनिया का। इसलिए कहा जाता है जो पहला ब्राह्मण सो पहला देवता। जो पहला देवता सो पहला क्षत्रीय। जो पहला क्षत्रीय सो पहला वैश्य। जो पहला वैश्य सो पहला शूद्र। मैं शूद्रों को आकरके ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बनाता हूँ।

**Time: 17.00-29.34**
**Student:** Baba, I saw a photo in which mother Jagdamba was wearing a garland of skulls around her neck. (Baba: Yes.) And Shankarji was on her lap. Baba, what is this?
**Baba:** Actually, when the Supreme Father Supreme Soul Shiva comes in this world, does the first sentence comes out through [the mouth of] Brahma or through Shankar or are actions



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

performed by Vishnu in practice? (Student: Through Brahma.) Through Brahma; and the Brahmakumaris consider Dada Lekhraj to be Brahma. But Dada Lekhraj is not Brahma [in reality]. He is the titleholder Brahma. The real Brahma was someone else. It was after listening to knowledge through his mouth that the first Brahmin of the world became ready. This is why it is said that the first Brahmin becomes the first deity. The first deity becomes the first *Kshatriya*[8]. The first *Kshatriya* becomes the first *Vaishya*[9]. The first *Vaishya* becomes the first *Shudra*[10]. I come and make the *Shudras* into Brahmins through Brahma.

तो पहला ब्राह्मण किसके द्वारा पैदा हुआ? आदि ब्रह्मा स्त्री चोला था या पुरुष चोला था? स्त्री चोला था। उस स्त्री चोले में भगवान बाप शिव ज्योति बिन्दु ने प्रवेश करके जो बात सुनाई वो बात ज्ञान की बात थी। भले सुनाने वाली उस मूर्ति ने स्वयं उसे समझा या न समझा, वो बड़ी माँ का पार्ट हो गया। बड़ी माँ, कौन है? ये प्रकृति ही बड़ी माँ है। प्रकष्ठ रूपेण कृति। कृति माने रचना। जो रचना भगवान की प्रकष्ठ कृति है ऐसी विशेष रचना है जिसकी रचना में भगवान बाप ने ऐडी से लेकरके चोटी तक की सारी ताकत लगा दी। इतना संग का रंग, इतना मिलन-मेला भगवान के साथ और कोई भी मनुष्यात्मा ने नहीं मना पाया। इसलिए जगदम्बा का मेला दुनिया में सबसे बड़ा मेला लगता है। क्यों लगता है? क्योंकि जो मिलन मेला है, जितना जगदम्बा ने मनाया होगा उनके साथ उतना मिलन मेला और किसी ने सब संबंधों से नहीं मना पाया। और, और वो ही जगदम्बा... ब्राह्मण है ना। जगदम्बा भगवान की बच्ची भी तो बनती है। जगदम्बा बच्ची भी तो बनती है ना। तो जब बच्ची बनती है, रचना बनती है, तो पत्नी के रूप में होती है पहली रचना या बच्चों-बच्चियों के रूप में होती है? (जिज्ञासु - पत्नी के रूप में।) हाँ। पहली रचना जो होती है पत्नी होती है। इसलिए प्रकृतिपति कहा जाता है।

So, through whom was the first Brahmin born? Was the first Brahma in a female body or in a male body? He was in a female body. The topic that God the Father Shiva, the Point of light narrated after entering that female body was the topic of knowledge. It doesn't matter whether the personality who narrated it herself understood it or not, she played the *part* of the senior mother. Who is the senior mother? This nature (*prakriti*) itself is the senior mother. [She is] the excellent form of creation. *Kriti* means creation. She is the excellent creation of God. She is such a special creation that God the Father invested His entire power from the head to the heel[11] to create her. No human soul has been able to enjoy the colour of the company, to have meeting (*milan melaa*) with God to that extent. This is why Jagdamba's fair is the biggest fair that is organized in the world. Why? It is because nobody has been able to have a meeting with all the relationships to the extent Jagdamba had it. And the same Jagdamba... she is a Brahmin, isn't she? Jagdamba becomes the daughter of God as well. Jagdamba also becomes the daughter, doesn't she? So, when she becomes the daughter, a creation... is the first creation in the form of a wife or in the form of sons and daughters? (Student: In the form of wife.) Yes. The first creation is the wife. This is why He is called *Prakritipati* (Husband of nature).

---

[8] Member of warrior class
[9] Member of merchant class
[10] Member of the fourth and the lowest division of the Indo-Aryan society
[11] *Edi se choti tak ki taakat lagaanaa*: to make huge efforts



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो जगदम्बा प्रकृति का रूप है। धरणी का रूप है। प्रकृति के 5 तत्वों में धरणी ही मुख्य है। वो धरणी में पांचों ही तत्व समाए हुए हैं। इसलिए जब वो विकराल रूप धारण करती है। कौन? जगदम्बा महाकाली बनती है। तो भगवान शिव की जो दूसरी मूर्ति शंकर है उसके विनाश का कार्य को संपन्न कर देती है। वो महाकाल की महाकाली है। वो किसका विनाश करती होगी? असुरों का विनाश करती होगी, अधर्मियों का विनाश करती होगी, विधर्मियों का विनाश करती होगी या श्रेष्ठ आत्माओं का विनाश करेगी? (सभी ने कुछ कहा।) जैसे गीता में अक्षर आए हैं विनाशाय य दुष्कृताम्। दुष्ट कर्म करने वाले हैं, अधर्मी हैं, उनका विनाश करता हूँ। किसके द्वारा? शंकर द्वारा विनाश गाया हुआ है। लेकिन शंकर नहीं करता। शंकर द्वारा का मतलब ये है शंकर ऐसी निराकारी स्टेज में एक संकल्प में टिकने की ताकत रखता है कि शिव शंकर भोलेनाथ की जो शक्तियाँ हैं वो शक्तियाँ ऐसा पार्ट बजाती हैं कि असुरों का संहार हो जाता है। सृष्टि का विनाश प्यूरिटी से होता है या इम्प्योरिटी से होता है? अपवित्रता से होता है विनाश।

So, Jagdamba is the form of *prakriti* (nature). She is the form of the earth (*dharni*). Among the five elements of nature, the earth itself is the main element. All the five elements are contained in the earth. This is why when she takes on a ferocious form; who? [When] Jagdamba becomes Mahakali[12], she accomplishes the task of Shankar, the second personality of God Shiva [i.e.] the task of destruction. She is the Mahakali of Mahakaal[13]. So whom will she destroy? Will she destroy the demons, will she destroy the *adharmis* (irreligious people), will she destroy the *vidharmis* or will she destroy the elevated souls? (Students said something.) For example, these words have been mentioned in the Gita: *vinaashaay ca dushkritaam* [meaning] I destroy those who perform evil actions, those who are irreligious. Through whom? Destruction through Shankar is famous. But Shankar does not do it [in reality]. 'Through Shankar' means Shankar has the power to become constant in incorporeal *stage*, [to become constant] in one thought that the *shaktis* (consorts) of Shiva Shankar Bholenath[14] play such a *part* that the demons are destroyed. Does the destruction of the world take place through *purity* or through *impurity*? Destruction takes place through impurity.

ये कलियुगी दुनिया में इम्प्यूरिटी इतनी बढ़ जाती है कि सारी सृष्टि का विनाश निश्चित हो जाता है । अति का अंत हो जाता है। वो अति ताकतवर आत्मा करेगी या साधारण आत्मा करेगी? तो ये महाकाल, जैसे महाकाल का पार्ट है विषपायी। विषय वासनाओं का क्या करता है? पान करता है। मनुष्य मात्र में जितनी भी विषय वासना, विकार भरे हुए हैं, उनका बरबस दान ले लेता है। स्वेच्छा से दान करें तो भी ठीक, और स्वेच्छा से दान न करें तो भी विकारियों की सृष्टि इस दुनिया में रहेगी नहीं। विकारी स्वभाव संस्कार सब खलास होने वाले हैं। ये विषय विकार काम विकार को कहा जाता है। एक ही देवता है जिसके लिए गायन हुआ है - काम दहन। काम विकार का क्या कर दिया? भस्म कर दिया। बाकी काम देवता, ऐसा

[12] A name of goddess Parvati
[13] The great death; a name of Shiva
[14] Shiva Shankar, the Lord of the innocent ones



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

मनुष्य नहीं है। क्या? अपने अंदर जो कामुक वृत्तियाँ हैं मनुष्य के अंदर वो राजयोग के द्वारा उन कामुक वृत्तियों को भस्म कर दिया। और गाया हुआ है होइहे कामो अनंग। जो नई सृष्टि होगी उसमें वो काम वासना वाली मार करने वाली हिंसक इन्द्रियाँ काम नहीं करेंगी। वो भ्रष्ट इन्द्रियों का कार्य क्षेत्र है जिनसे आज की सृष्टि पैदा हो रही है बिच्छु-टिण्डनों की सृष्टि। वो सृष्टि नहीं होगी पैदा। क्यों? क्योंकि वहाँ काम की मार करने वाली इन्द्रियाँ ही नहीं होंगी सतयुग और त्रेता में जहाँ हे कृष्ण नारायण का राज्य होता है, राम का राज्य होता है।

*Impurity* increases to such an extent in the Iron Age world that the destruction of the entire world becomes certain. The extremity comes to an end. Will a powerful soul bring extremity or will an ordinary soul [bring extremity]? So, this Mahakaal… for example the *part* of Mahaakaal is to drink poison; what does he do with the vices? He drinks them. He forcibly takes the donation of all the vices and desires filled in the every human being. If they donate them voluntarily, it is good and if they do not donate them voluntarily even then the world of vicious people will not exist. All the vicious natures and *sanskaars* are going to perish. Lust is called *vishay-vikaar*. There is only one deity for whom it is famous that he burnt lust. What did he do to lust? He burnt it to ashes. As for the rest, there is no human being called the deity of lust (*kaam devta*). What? He (Shankar) burnt the lustful instincts within himself, within a human being into ashes through Raja yoga. And it is sung: *hoihe kaam anang* (lust has become bodiless). In the new world, the violent *indriya* that provokes lust will not work. It is through the actions of the unrighteous *indriya* that today's world, a world of scorpions and spiders is being created. That creation will not be created. Why? It is because the *indriya* that provokes lust will not at all exist there, in the Golden and the Silver Ages, where there is a kingdom of '*Hey* Krishna Narayan', [where there is] the kingdom of Ram.

वहाँ श्रेष्ठ इन्द्रियों से संतान होती है। श्रेष्ठ इन्द्रियों में भी सबसे श्रेष्ठ इन्द्रियाँ कौनसी हैं? (सभी ने कहा - आँख।) नेत्र। जैसे व्यास को दिखाया गया है। व्यास ने जो सृष्टि पैदा की कुरुवंश में वो कौनसी सृष्टि थी? भ्रष्ट इन्द्रियों की सृष्टि थी क्या? (किसी ने कुछ कहा) हाँ। आँख के प्यार से। आँख के स्नेह से जो दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है। प्यार से कोई को भी मारा जा सकता है। द्वेष से कोई मरे न मरे। तो ये आँखें इन्द्रियों में सबसे श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं। दो प्रकार की इन्द्रियाँ होती हैं। एक कर्मेन्द्रियाँ और दूसरी ज्ञानेन्द्रियाँ। कौनसी श्रेष्ठ हैं? ज्ञानेन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं। और उन ज्ञान इन्द्रियों की जो पैदाइश होती है उस पैदाइश की भी मान्यता आज भी भारत में चली आ रही है। हमारे भारत का जो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पक्षी है राष्ट्रीय पक्षी, कौन माना जाता है? (सभी ने कहा - मोर।) क्यों? क्योंकि उसकी देह अभिमान की पूँछ, मार करने वाला देहअभिमान नहीं होता है। इतनी श्रेष्ठ पूँछ है कि वो ऐसा ज्ञान का डांस करती है जो सबको देखने में तबीयत प्रसन्न हो जाती है। ये मोर ही ऐसा एक प्राणी है उदाहरण देने के लिए कि देवताओं की सृष्टि श्रेष्ठ इन्द्रियों की, श्रेष्ठाचारी देवताएं थे। देवताएं भ्रष्टाचारी नहीं होते। वो श्रेष्ठाचारी देवताएं श्रेष्ठ इन्द्रियों के, मुख के प्यार से संतान पैदा होती थी। भ्रष्ट इन्द्रियों से संतान पैदा नहीं होती थी उस समय। इसलिए जिसका आदि अच्छा होगा उसका अंत भी अच्छा होगा।



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Children are born through the righteous *indriyaan* there. Which are the most righteous *indriya* even among all the righteous *indriyaan*? (Everyone said: Eyes.) Eyes. For example, Vyas has been depicted. What kind of creation did Vyas create in the Kuru clan (*kuruvansh*)? Was it the creation [created] through the unrighteous *indriya*? (Someone said something.) Yes. [It was the world created] through the love of the eyes, through the affection of the eyes which is the biggest power in the world. Anyone can be killed through love. Someone may or may not die through hatred. So, these eyes are the most righteous *indriyaan* among all the *indriyaan*. There are two kinds of *indriyaan*. One is the *karmendriyaan*[15] and the other is the *gyaanendriyaan* (the sense organs). Which are the righteous ones? The *gyaanendriyaan* are righteous. And as regards the creation created through the *gyaanendriyaan*, it is accepted in India even now. Which bird is considered to be the most righteous bird, the national bird of our India? (Everyone said: Peacock.) Why? It is because its tail of body consciousness… it does not have the body consciousness that hurts. It is such a righteous tail that everyone feels happy looking at the dance of knowledge performed [with it]. This peacock is the only living creature that can be mentioned as an example [to say that] the world of the deities was [a world created through] the righteous *indriyaan*; the deities were righteous. The deities are not unrighteous. Those righteous deities used to give birth to children through the righteous *indriyaan*, through the love of mouth. Children were not born through the unrighteous *indriyaan* at that time. This is why something that has a good beginning will also have a good ending.

आज की संतान की पैदाइश में पुरुष को भी कमजोरी आ जाती है। स्त्री को भी दुःख होता है। पैदाइश की शुरुआत में ही जब दुःख होता है तो मनुष्य जब मरेगा तो दुःख पैदा नहीं होगा? कितने घाबड़े आते हैं। हर मनुष्य आज की मौत से डरता है। देवताओं की ऐसी मौत नहीं होती है। उनको अमर कहा जाता है। ऐसा नहीं कि वो शरीर छोड़ते नहीं हैं। लेकिन इच्छा मृत्यु होती है। जब चाहें शरीर को छोड़ें और जब तक न चाहें शरीर को न छोड़ें। लंबी आयु वाले हों।

Today, in the process of giving birth to a child, the man also feels weak and the woman experiences sorrow as well. When sorrow is experienced in the very beginning of the birth, will that human being not experience sorrow when he dies? He gasps so much! Every human being fears death today. Deities do not die this way. They are called immortal (*amar*). It is not that they do not leave their bodies but they die according to their wish. They can leave their bodies whenever they want and they remain alive as long as they wish. They have a longer lifespan.

**समयः 29.39-39.05**

**जिज्ञासुः** बाबा, महाविनाश के बाद सतयुग आएगा। ठीक है?

**बाबाः** महाविनाश जब होगा... जो साधारण विनाश है वो तो हमेशा होता ही रहता है। कभी यहाँ भूकम्प हुआ, कभी कहाँ भूकम्प हुआ। कभी यहाँ छोटा सा एटम बम फूट गया, कभी वहाँ फूट गया। कभी एक शहर नेस्तनाबूद हो गया, हीरोशिमा, नागासाकी, कभी वहाँ कुछ हो

[15] Parts of the body used to perform actions



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

गया। ये तो होता रहता है। लेकिन महाविनाश, महामृत्यु ये टाइम जब आता है तब क्या होता है? हाँ, प्रश्न पूरा नहीं हुआ आपका?

**जिज्ञासु:** धरती जलमग्न हो जाती है। आत्मायें थोड़ी सी बचती है...

**बाबा:** सृष्टि जो है, जब विनाश होता है तो एटमिक विनाश के कारण भूकम्प आते हैं और भूकम्पों की गर्मी और एटमिक गर्मी के कारण जो नार्थ पोल है पृथ्वी का, उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव, जहाँ बर्फ के मीलों ऊँचे पहाड़ हैं, इतनी गर्मी के वायुमण्डल में वो पहाड़ फट जाते हैं, क्षीर-क्षीर होने लगते हैं। और वो बड़े-बड़े हिमखण्ड समुंदर में तैर के जाते हैं। एक गिलास पानी रखा हुआ है उसमें इतना बड़ा बर्फ का टुकड़ा डाल दो। तो पानी बाहर निकलेगा कि नहीं निकलेगा? (किसी ने कहा - निकलेगा।) ऐसे ये समंदर जोर से उछाल मारता है। और सारी पृथ्वी जगमग्न हो जाती है।

**Time: 29.39-39.05**
**Student:** Baba, the Golden Age will arrive after the mega destruction (*mahaavinaash*).
**Baba:** When the mega destruction takes place… the ordinary destructions keep taking place constantly. Sometimes an earthquake occurs here; sometimes an earthquake occurs somewhere else. Sometimes a small atom bomb explodes here, sometimes it explodes there. Sometimes one city, like Hiroshima, Nagasaki is destroyed and sometimes something else happens there. This keeps happening. But what happens at the *time* of the mega destruction, [at the time] of great death? Yes, haven't you completed your question?
**Student:** The earth submerges under water. A few souls remain…
**Baba:** When the destruction of the world takes place, earthquakes occur because of atomic explosions and because of the heat produced by earthquakes and the atomic heat the *north pole* of the earth, the northern pole and the southern pole, where there are miles high mountains of ice, those mountains break in an atmosphere of so much heat and they start melting. And big icebergs (*himkhand*) start floating in the ocean. If there is a glass full of water and if you put a big piece of ice in it, will the water flow out [of the glass] or not? (Student: It will.) Similarly, this ocean splashes with great force and the entire earth is submerged.

ये तो रही स्थूल विनाश की बात। लेकिन पहले हर कार्य स्थूल में होता है या सूक्ष्म में संपन्न होता है? (सभी ने कहा - सूक्ष्म में।) पहले सूक्ष्म में संपन्न होता है। तो ब्राह्मणों की दुनिया में जो भगवान ज्ञान देते हैं, वो ज्ञान सतोप्रधान स्टेज वाला भी होता है। और वो ज्ञान ब्राह्मणों की ही मूढ़मति से तामसी स्टेज वाला भी बनता है। जैसे नदियाँ, सुखदायी भी हैं, और वो ही नदियों में जब बाढ़ आती है तो दुःखदायी हो जाती हैं। ऐसे ही ये सागर कहीं मीठा भी है और कहीं खारा भी है। ये इतनी बड़ी उछाल मारता है कि जितने भी मनुष्य सृष्टि में, खास करके ब्राह्मणों की मनुष्य सृष्टी में जो ज्ञानी आत्माएं हैं वो मनमत मिक्स करके ऐसा ज्ञान मिक्स करती हैं कि वो सारा ज्ञान जलमयी करा देता है। ऐसी जलमयी जब नदियों में होती है, बाढ़ आती है तो पानी में मिट्टी मिल जाती है या नहीं मिल जाती है? मिल जाती है। ऐसे ही ब्राह्मणों की दुनिया में वो देह अभिमान की मिट्टी मिक्स हो जाती है।


Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

और वो देह अभिमान की मिट्टी मिक्स होने के कारण सब विकारी बन पड़ते हैं। यहाँ तक कि जो अव्वल नंबर कुरी के ब्राह्मण हैं, सारी सृष्टि के बीज हैं, वो भी नंबरवार बन जाते हैं।

This was about the physical destruction. But does every task take place in the physical form first or in subtle form first? (Everyone said: In the subtle form.) First it is accomplished in a subtle form. So, the knowledge that God gives in the world of Brahmins, that knowledge is in the *satopradhaan* stage and due to the foolishness of the Brahmins themselves that knowledge reaches the degraded (*taamasi*) stage as well. For example the rivers; they also give happiness and when the same rivers bring flood, they give sorrow as well. Similarly, this ocean is sweet at some places as well as salty at some places. It splashes with such a great force that all the human beings in the world, especially the knowledgeable souls in the human world of Brahmins *mix* the opinion of their mind in knowledge in such a way that the entire knowledge causes inundation. When the rivers overflow to such an extent, when floods occur, is mud mixed in the water or not? It is mixed. Similarly, in the world of Brahmins, that mud of body consciousness is mixed and because of the mixture of the mud of body consciousness, everyone becomes vicious. [They become vicious] to such an extent that the Brahmins of the *number* one category, the seeds of the entire world also become [vicious] number wise[16].

तो पहले ब्राह्मणों की दुनिया में विनाश होता है या बाहर की दुनिया में विनाश होता है? पहले ब्राह्मणों की दुनिया में विनाश होता है। ये विनाश होने वाला है। क्या? न बेसिक ब्राह्मणों की दुनिया बचेगी और न एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया बचेगी। सबको संशय रूपी मृत्यु आएगी। संशय आ जावेगा। संशयात्मा विनश्यति। पद डाउन हो जावेगा। पद का विनाश होगा या आत्मा का विनाश होगा? ( सभी ने कहा - पद का।) पद का विनाश हो जावेगा। तो महाविनाश होता है। आपने स्थूल बात कही होगी कि सारी सृष्टि जलमग्न हो जाती है। हाँ, फिर? (जिज्ञासु - मुट्ठी भर आत्मायें बचती है ।) मुट्ठी भर बचेंगी। जब सारी सृष्टि जलमयी हो जाएगी तो थोड़े से बचते है। (जिज्ञासु - यहाँ के जो सुख-संपत्ति के साधन हैं वो भी सब समाप्त हो जाते है ।) हाँ। जो योगी आत्माएं हैं वो दुनियावी साधनों के आधार पर जिन्दा रहती हैं या योग के आधार पर जिन्दा रहती हैं? (किसी ने कहा - योग के आधार पर।) उनकी योगवृत्ति इतनी गहरी हो जाती है कि श्वास जो लेते हैं, हवा, उस श्वास में ही पांचों तत्व समाए रहते हैं। आपने अनुभव किया होगा, जिन दिनों याद की अच्छी अवस्था रहती है उन दिनों भूख भी कम हो जाती है। टट्टी पेशाब भी कम हो जाती है। संकल्प भी कम हो जाते हैं। ऐसी बीजरूप स्टेज बन जाती है। अव्यक्त अवस्था बनती है।

So, does the destruction take place first in the world of Brahmins or in the outside world? The destruction takes place first in the world of Brahmins. This destruction is going to take place. What? Neither the world of Brahmins in the *basic* [knowledge] nor the world of the Brahmins in the advance [knowledge] will survive. Everyone will die the death in the form of doubt. They will have doubt. The souls who have doubts are destroyed. Their status will degrade. Will their status be destroyed (ruined) or will the soul be destroyed? (Everyone said: The status.) Their status will be destroyed. So, the mega destruction takes place. You must

[16] At different levels



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

have said about the physical immersion of the entire world in water. Yes, then? (Student: A handful of souls are left.) Handful of [souls] will survive. When the entire world is inundated, a few [souls] survive. (Student: The materials of luxury that are present here will also be destroyed.) Yes. Do the *yogi* souls survive with the help of the worldly means or with the help of yoga? (Someone said: With the help of yoga.) The method of [performing] yoga becomes so intense that the air they breathe itself contains all the five elements in it. You must have experienced that during the days when your stage of remembrance is good, you feel less hungry. The urge for passing stools and urine is also reduced. The [creation of] thoughts are also reduced. You achieve such a seed form stage. You attain an *avyakt* (subtle) stage.

तो जो महाविनाश की आखरी चरम सीमा होगी उस चरम सीमा में मुट्ठी भर जो आत्माएं बचेंगी सृष्टि की, वो योगबल के आधार पर उनको सुख- समृध्दि के साधनों की दरकार नहीं रहेगी। साधनों के आधार पर जो साधना की जाती है वो श्रेष्ठ साधना है या निष्कृष्ट साधना है? (सभी ने कहा - निष्कृष्ट साधना है।) अभी हम सब कौनसी साधना कर रहे हैं? (किसी ने कहा - गाना बजाना।) साधन मिलेंगे तो अच्छा योग लगेगा। संगीत बजेगा तो याद करेंगे। लाल लाईट होगी तो अव्यक्त स्टेज बनेगी। संगठन में, ब्राह्मणों के संगठन में, माउंट आबू में जावेंगे तो अवस्था ऊँची रहेगी। नीचे की दुनिया में आ जावेंगे तो अवस्था नीचे गिर जावेगी। ये तो साधनों के आधार पर साधना हो गई। हमारी साधना ऐसी उच्च कोटि को पकड़ेगी, हमें दुनिया के सुख साधन, समृद्धि की दरकार ही नहीं रह जावेगी। हाँ, अब क्या कहते हैं? (जिज्ञासु - सतयुग में योग-साधना...) शुरु-शुरुआत में जो फाउण्डेशन संगमयुग में पड़ता है, स्वर्णिम संगमयुग का, वो इस दुनिया की कोई भी पुरानी चीज़ का आधार नहीं लेता। इन आँखों से जो कुछ भी पुरानी दुनिया देखते है - देह, देह के संबंधी और देह के भिन्न-भिन्न प्रकार के पदार्थ, वो सब खलास हो जाने वाले हैं।

So, handful of souls of the world who survive in the climax of the mega destruction, they will not need the means of happiness and prosperity because of the power of yoga. Is the *sadhanaa* (practice of yoga) made with the help of *saadhan* (means) an elevated *sadhanaa* or is it an inferior *sadhanaa*? (Everyone said: It is an inferior *sadhanaa*.) What kind of *sadhanaa* are we doing now? (Someone said: Playing songs.) If we get *saadhan*, we will have good yoga (remembrance). If music is played, we will remember [Baba]. If there is red light, we will be able to attain an *avyakt stage*. If we go to the gathering, the gathering of Brahmins, if we go to Mount Abu, our stage will remain high. If we come to the world below, our stage will fall. This is a *sadhanaa* based on *saadhan*. [But] our *sadhanaa* will reach such a high stage that we will not need the means of comfort and prosperity of the world at all. Yes, what do you say now? (Student: Yoga and remembrance in the Golden Age...) The *foundation* of the Golden Confluence Age that is laid in the beginning of the Confluence Age does not take the support of any old thing of the old world. The old world that we see through these eyes [i.e.] the body, the relatives of the body, and different things related to the body, everything is going to perish.



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो संगमयुगी स्वर्णिम स्वर्ग, जो युग है, वो तो निराधार युग है। बाकी जो सतयुग का पहला जन्म होगा, वहाँ प्रकृति सब सुख मुहैया कराएगी। देह के हर प्रकार के सुख मुहैया कराएगी। अभी तो प्रकृति तमोप्रधान बनती जावेगी या सतोप्रधान बनेगी? (सभी ने कहा - तमोप्रधान।) क्योंकि 500 करोड़ की जो सृष्टि है मनुष्यों की, वो जब तक विनाश को नहीं पावे तब तक जो प्रकृति का बड़ा रूप है, मूल रूप है, वो विकराल रूप धारण करता चला जावेगा। यहाँ तक कि ये बोला है कि ये शरीर रूपी जो प्रकृति है, ये शरीर के पांच तत्व सड़ते जावेंगे, और आत्मा? पावरफुल बनती जावेगी। समाधान हुआ? (जिज्ञासु ने हामी भरी।)

So, the Confluence Age Golden heaven [i.e. the Golden Confluence] Age is an independent age. As regards the first birth of the Golden Age, the nature will provide all the comforts there. It will provide every kind of comfort for the body. Will the nature continue to become *tamopradhaan*[17] now or will it become *satopradhaan*[18]? (Everyone said: *Tamopradhaan*.) It is because unless the world of five billion human beings is destroyed, the big form, the original form of nature will continue to take on a fearsome form. It has been said to the extent that this nature in the form of body, these five elements of the body will continue to decay; and what about the soul? It will go on becoming powerful. Did you get the answer? (Student gave an affirmative nod.)

**समयः 39.10-41.46**

**जिज्ञासुः** बाबा, जो मुट्ठी भर आत्माएं बचेंगी, वो आत्माएं भी अपना शरीर छोड़ेंगी, कंचनकाया बनाएगी। जो आत्मा उसके अंदर होगी मन-बुद्धि से, परमधाम जाएगी...

**बाबाः** पहले परमधाम जाएगी। विनाश के टाइम सभी आत्माएं 500 करोड़, चाहे ज्ञान योग में चलने वाली हों, न चलने वाली हों; भगवान को नंबरवार पहचानने वाली हों, न पहचानने वाली हों, सबको अपना ये शरीर छोड़ना है। कोई स्वेच्छा से अपना शरीर छोड़ेंगे, बर्फ में शरीर सुरक्षित रहेंगे और वो बुद्धियोग से ऊपर जावेंगे। और कोई बुद्धियोग से नहीं जावेंगे। कैसे जावेंगे? शरीर, विनाश की मार से शरीर छूटेगा। हाय-हाय करके शरीर छोड़करके जावेंगे। हाँ।

**Time: 39.10-41.46**

**Student:** Baba, handful of souls who survive will also leave their body and rejuvenate (*kancankaayaa*) [their body]. The souls in them (the bodies) will go to the Supreme Abode through the mind and intellect...

**Baba:** It will go to the Supreme Abode first. At the time of destruction, all the five billion souls, whether they are the ones who follow the knowledge and [practice] yoga or not, whether they are the ones who recognize God more or less (according to the knowledge in them) or not, everyone has to leave his body. Some will leave their body voluntarily; their bodies will remain safe in the ice and they will go up (to the Supreme Abode) through the connection of the intellect. And some will not go [up] through the connection of the intellect. How will they go? They will leave their body because of the injuries caused in the destruction. They will make sounds of grief, leave their body and [then] go. Yes.

[17] Dominated by darkness or ignorance
[18] Consisting in the quality of goodness and purity



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

**जिज्ञासुः** जैसे दो परमधाम बताए हैं बाबा ने, तो एक जड़ परमधाम है और दूसरा जो बनेगा परमधाम। जो योग में रहेंगी मन-बुद्धि से, वो परमधाम जो जाएंगी तो जो बना हुआ परमधाम होगा उसमें जाएंगी या जड़ वाले में जाएंगी ?

**बाबाः** पहले-पहले आत्मिक स्थिति में रहने वालों का संगठन तैयार होगा या 500 करोड़ मनुष्यात्माओं का परमधाम तैयार होगा? (सबने कहा - आत्मिक स्थिति वालों का।) जो आत्मिक स्थिति की पढ़ाई पढ़ रहे हैं उनकी ऐसी स्टेज बन जाएगी: मैं आत्मा, दूसरा मेरा बाप ज्योतिबिन्दु आत्मा। और कोई संकल्प नहीं। जैसे जड़वत् स्टेज बन जावेगी। जड़वत होंगे नहीं। (जिज्ञासु - उन आत्माओं को उपर जो जड़ परमधाम होगा... ) जब इसी सृष्टि पर परमधाम बन गया तो ऊपर जाने की क्या दरकार है? उस समय तो 500 करोड़ की दुनिया भी रहेगी। और इस सृष्टि पर **तुम** बच्चे, वो बच्चे नहीं, ये बी.के बच्चे नहीं, **तुम** बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे। तो 500 करोड़ की दुनिया इस सृष्टि पर थोड़े ही उतार लेगी। किसके लिए बोला? **तुम** बच्चों के लिए।

**Student:** For example, Baba has said about two kinds of *Paramdhaam* (the Supreme Abode). So, one is the inert *Paramdhaam* and the other *Paramdhaam* is the one that will be created [in this world]. Those who remain in yoga through the mind and intellect, those who will go to the *Paramdhaam*, will they go to the *Paramdhaam* that is created or will they go to the inert *Paramdhaam*?

**Baba:** Will the gathering of those who remain stable in soul conscious stage get ready first or will the *Paramdhaam* of five billion human souls get ready [first]? (Everyone said: Of those who remain in soul conscious stage.) Those who are studying the knowledge of being in the soul conscious stage will attain this stage: I am a soul and secondly my Father is a point of light soul. There will be no other thought. The *stage* will become inert. It is not that we will be inert [in reality]. (Student: As regards those souls, the inert *Paramdhaam* above…) When the *Paramdhaam* is established in this very world, where is the need to go above? At that time, the world of five billion [human beings] will also exist. And in this world, **you** children…, not those children, not these BK children, **you** children will bring the *Paramdhaam* down to this world. So, the world of five billion [human beings] will not bring it down to this world. For whom was it said? [It was said] for **you** children.

**समयः 41.48-01.02.52**

**जिज्ञासुः** बाबा, जब ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार हुए, कलकत्ता गए तो बाबा बोलते हैं कि बड़ा भाई बाप समान होता है; प्रजापिता के लिए बताया कि बड़ा भाई बाप समान होता है और बड़ी बहन भी माँ समाना होती है। तो जाके दूसरी माता से बताया ब्रह्मा बाबा ने...

**बाबाः** ब्रह्मा बाबा ने क्या किया?

**जिज्ञासुः** दूसरी माता को बताया, जो दूसरी माता थी उसको बताया।

**बाबाः** हाँजी। बताया।



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

**जिज्ञासु:** तब बाबा बोले दूसरे नम्बर की ब्रह्मा हो गई छोटी माँ । और फिर बाबा बताते है दूसरे नम्बर में कि बह्मा बाबा ने जाके अपने बहन को बताया और बहन ने बताया वेदान्ती बहन को और फिर...

**बाबाः** जानकी ने? (जिज्ञासु: वेदान्ती, छोटी मम्मी ।) ऐसा है... (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) समझ लो पहले, समझ लो। कुछ गलतफहमी है इसलिए आप ऐसा बोल रहे हैं। ब्रह्मा बाबा का ज्यादा नज़दीकीपना... दोनों माताओं में से कौनसी माता के साथ उनका ज्यादा नज़दीकीपना बचपन से लेकरके रहा? दो माताएं थीं। एक माता ब्रह्मा बाबा की बड़ी बहन थी। और एक माता बड़ी बहन नहीं थी। तो बचपन से लेकर कौनसी बहन... बड़ी बहन माँ समान मानी जाती है। कौनसी बहन से ब्रह्मा बाबा को बचपन से लेकर ज्यादा स्नेह मिला? (जिज्ञासु - जो बहन नहीं थी।)

**Time: 41.48-01.02.52**
**Student:** Baba, when Brahma Baba had visions, when he went to Calcutta, Baba says that the elder brother is equal to the father; [Baba] said this for Prajapita that the elder brother is equal to the father and the elder sister is equal to the mother. So, Brahma Baba went to the second mother and narrated her…
**Baba:** What did Brahma Baba do?
**Student:** He narrated [the visions] to the second mother, he narrated to the second mother who was there.
**Baba:** Yes; He narrated [the visions].
**Student:** Then Baba has said that the junior mother is the second Brahma and secondly Baba says that Brahma Baba went to his sister and narrated [the visions] and [then] the sister narrated it to sister Vedanti and then…
**Baba:** Janaki? (Student: Vedanti, the junior mother.) What happened is… (Student said something.) Understand it first; understand it. There is some misunderstanding; this is why you are saying this. As regards Brahma Baba's closeness… which was the mother between the two mothers to whom Brahma Baba was close from his childhood? There were two mothers. One mother was Brahma Baba's elder sister and another mother was not the elder sister. So, from his childhood, which sister… the elder sister is considered to be equal to the mother. From which sister did Brahma Baba receive more affection since his childhood? (Student: The one who was not the sister.)

नहीं। माता तो थी दोनों। लेकिन एक माता उनकी बड़ी बहन थी। बड़ी बहन से उनको बचपन से प्यार मिला। और ब्रह्मा बाबा प्यार को तोड़ने वाली आत्मा तो नहीं है। तो जो साक्षात्कारों की बात है वो बहनोई को बताई होगी सीधा जाकर या बहनोई से बताने की हिम्मत ही नहीं पड़ी? किसको बताएंगे? (सभी ने कहा - बहन को बतायेंगे।) दोनों माताओं में से कौनसी माता ज्यादा नज़दीक थी? वो माता ज्यादा नज़दीक थी जो उनकी बड़ी बहन थी, लौकिक में। उसको बताया। और जो बड़ी बहन थी वो आखरी जन्म में भी श्रेष्ठ संस्कारों वाली होगी , भारत माता के संस्कारों वाली होगी या विदेशियों से प्रभावित होने वाली होगी? (सभी ने कुछ कहा।) क्योंकि उसका आदि जन्म जो है विष्णु स्वरूप जन्म ... (जिज्ञासु से) बैठ जाईये, यहीं बैठ जाईये। आदि जन्म जो है वो विष्णु स्वरूप जन्म है। पहला जन्म आदि में विष्णु माना



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

पति-पत्नी दोनों के संस्कार मिलकरके एक थे। तो आदि सो अंत। अंतिम जन्म में भी वो विष्णु समान संस्कारों से मिलने वाली आत्मा थी। ब्रह्मा और उनकी पत्नी यशोदा की तरह नहीं थी। अगर होती तो ब्रह्मा बाबा को ओम् राधे सरस्वती को यज्ञ का निमित्त बनाने की दरकार नहीं थी।

No. Both were mothers indeed but one mother was his elder sister. He received love from the elder sister since his childhood. And Brahma Baba is certainly not a soul who breaks [the relationship of] love. So, will he have narrated the topic of the visions directly to his brother-in-law or wouldn't he have been able to gather courage to tell his brother-in-law at all? Whom will he tell? (Everyone said: He will tell [about it] to his sister.) Which mother was closer to him between the two mothers? The mother who was his *lokik* (worldly) elder sister was closer to him. He told [about the visions to] her. And as regards the elder sister, will she be the one with righteous *sanskaars* even in the last birth, will she be the one with the *sanskaars* of Mother India (*Bharat mata*) or will she be the one who is influenced by the foreigners? (Everyone said something.) It is because her previous birth, the birth as the embodiment of Vishnu… (To the student:) Please sit down; please sit here. Her previous birth is the birth as the embodiment of Vishnu. In the previous birth [i.e.] in the beginning [of the *yagya*], they were Vishnu meaning the *sanskaars* of the husband and wife were harmonized. So, whatever happens in the beginning happens in the end. Even in the last birth, she was a soul who harmonizes *sanskaars* like Vishnu. She was not like Brahma [Baba] and his wife Yashoda. Had she (Yashoda) been like her (elder sister of Braham Baba), there wouldn't have been the need for Brahma Baba to make Om Radhe Saraswati the instrument of the *yagya*.

तो वो विष्णु स्वरूप, उसकी नाभि से ब्रह्मा निकला। शास्त्रों में दिखाते है, मुरली में भी बोला, विष्णु की नाभि से ब्रह्मा निकला। ये यहाँ शूटिंग होती है। वो विष्णु स्वरूप आत्माएं थीं जिनके संस्कार मिले हुए थे। लेकिन कलियुग के अंत में जो पत्नियाँ होती हैं, खास करके भारत माता जिसका टाइटल है, जिस आत्मा का; वो अपनी सौत को अपनी बहन के रूप में मानती है या सौतन के रूप में देखने वाली होगी? कभी भी सौतन के रूप में देखने वाली नहीं होगी - भारत माता जिसका टाइटल है। वो पति के सुख में अपना सुख मानने वाली होती है। पति जिस बात में सुखी उसी बात में पत्नी सुखी। कलकत्ते में ये परंपरा रहती है कलियुग के अंत में कि जो भी पैसे वाले होते हैं वो दो-दो, तीन-तीन पत्नियाँ रख लेते हैं। दूसरी पत्नी को घर मकान बनाकरके दे देते हैं, अलग रखते है । वो तो तब रखते हैं जबकि दोनों में झगड़ा होता है। अगर झगड़ा न हो तो आपस में मिलजुल करके भी रह सकती हैं। रह सकती हैं या नहीं रह सकती हैं? रह सकती हैं। तो जो दोनों बहनें आपस में बहन के रूप में रह रही हों और ब्रह्मा की बात, साक्षात्कार की, उनको सुनाई गई, ब्रह्मा बाबा की बड़ी बहन को तो पहले-पहले किसको सुनाएगी वो? अपने पति को सुनाएगी या उस बहन को सुनाएगी? (जिज्ञासु - बहन को ।) बहन को सुनाया।



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

So, Brahma emerged from the navel of that form of Vishnu. It is shown in the scriptures and it is also said in the murli that Brahma emerged from the navel of Vishnu. This *shooting* takes place here. They (elder sister and brother-in-law of Brahma Baba) were the souls in the form of Vishnu whose *sanskaars* were harmonized. But as regards the wives in the end of the Iron Age, especially the soul whose *title* is Mother India; will she consider her husband's co-wife (*sautan*) as her sister or will she consider her as the co-wife? She, the one whose *title* is Mother India will never consider her as the co-wife. She accepts her husband's happiness to be her own happiness. The wife remains happy in whatever brings happiness to her husband. There is this tradition in Calcutta in the end of the Iron Age that all the prosperous people have two, three wives. They build a separate house for the second wife; they keep them separate. They keep them separate when there is quarrel between both [the wives]. If they do not quarrel, they can also live together. Can they or can't they? They can. So, if both the sisters (wives) were living together as sisters and Brahma Baba narrated the topic of visions to the elder sister then, whom will she tell it first of all? Will she narrate it to her husband or to that sister? (Student: To the sister.) She narrated it to the sister.

बहन जो है वो बुद्धि में तीखी थी। वो तो जगदम्बा का पार्ट है ना। जगदम्बा माना सारे जगत की अम्बा है; हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, सबकी अम्बा। और भारत माता माने? सिर्फ भारतवासियों की माता। तो जो जगदम्बा का पार्ट है वो दूसरी माता का था। वो दूसरी माता को जो साक्षात्कारों की बात सुनाई गई वो माता बोलने में ज्यादा होशियार थी। और विष्णु की पार्टधारी वैष्णवी देवी बोलने में ज्यादा होशियार होती है या कर्म करने में ज्यादा होशियार होती है? प्रैक्टिकल जीवन में प्रैक्टिकल कर्म करके दिखाने में ज्यादा होशियार होती है। बोलने में ज्यादा होशियार नहीं। जीभ लम्बी नहीं होती है। तो जो लम्बी जीभ वाली थी जिसको महाकाली कहा जाता है, उसको वो साक्षात्कारों की बात सुनाई गई। और अंतिम जन्म में जो पुरुष है वो पुरुष अति विकारी बन जाता है या कम विकारी बनके रहता है? अति विकारी। तो उसका जो विकारी स्नेह है वो औरस पत्नी के साथ ज्यादा रहता है या देह का संबंध दूसरी पत्नी के साथ ज्यादा रहता है? ज्यादा मुँहलगी पत्नी कौन होती है? (किसी ने कहा - दूसरी वाली।) तो जो ज्यादा मुँहलगी थी उसने उस साक्षात्कार की बात को उस व्यक्ति से बोल दिया। और जिस समय बोला उस समय दोनों माताएं मौजूद थीं।

The sister had a sharp intellect. It is the *part* of Jagdamba, isn't it? Jagdamba means the mother of the entire world. [She is] the mother of everyone, the Hindus, Muslims, Sikhs, Christians. And what is meant by Mother India? She is just the mother of Indians (*Bharatwaasi*). So, the *part* of Jagdamba was of the second mother. The second mother to whom the topic of visions was narrated was more skilled in speaking. And is the actor who plays the role of Vishnu, i.e. Vaishnavi *devi* more skilled in speaking or is she more skilled in performing actions? She is more skilled in performing actions in practice in the *practical* life. She is not more skilled in speaking. She is not a great talker. So, the topic of visions was narrated to the one who was a great talker, the one who is called Mahakali[19]. And in the last birth, does a man become extremely vicious or does he remain less vicious? [He becomes] extremely vicious. So, does he have vicious love more for the legal wife or does he have more physical relationship with the second wife? Which wife is bolder? (Someone said: The

[19] A name of goddess Parvati



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

second wife.) So, the one who was more bold narrated the topic of visions to that person (brother-in-law of Brahma Baba). And when she narrated it, both the mothers were present.

तो तीन आत्माएं हो गई। एक ने ब्रह्मा के बोले हुए साक्षात्कारों की बात को सुनाया। पहले सुना, बाद में सुनाया। और जब सुनाया उस व्यक्ति को तो... सुनने के साथ-साथ कोई बुद्धि से समझ भी सकता है या नहीं समझ सकता है? (किसी ने कहा - समझ सकता है।) सुनने के साथ उसका रहस्य उसने समझा। अपने आप नहीं समझा। वो सुप्रीम सोल ने प्रवेश किया। किसमें? ( किसी ने कहा - प्रजापिता।) नहीं। दोनों में प्रवेश किया। एक माता में प्रवेश किया जो बड़-बड़ बोलने वाली थी। सुनने और सुनाने की शक्ति जिसमें ज्यादा है। जिसकी यादगार में भारतवर्ष में लंबी जीभ दिखाई जाती है उस माता की। (सभी ने कहा - काली।) कहते हैं ना इसकी तो जीभ बड़ी लम्बी है। माना वाचा में इसको कोई हराय नहीं सकता। तो वो सुनने और सुनाने वाली हुई। सुनने-सुनाने का फाउण्डेशन उसको भक्तिमार्ग का फाउण्डेशन कहेंगे या ज्ञानमार्ग का फाउण्डेशन कहेंगे? (सभी ने कहा - भक्तिमार्ग।) ये भक्तिमार्ग का फाउण्डेशन पड़ गया उस आत्मा के द्वारा। इसलिए नाम पड़ता है जगदम्बा। सो महाकाली बनती है। सुनने-सुनाने का भक्तिमार्ग का फाउण्डेशन उसके द्वारा और फिर जिसको सुनाया गया उसमें परमात्मा शिव ने प्रवेश करके समझने और समझाने का फाउण्डेशन डाला।

So, there were three souls. One [of them] narrated the topic of visions told by Brahma. First she heard, and later she narrated [it] and when she narrated it to that person then… can someone also understand through the intellect while listening or not? (Someone said: He can.) He **understood** its secret while listening. He did not understand it on his own. The Supreme Soul entered; in whom? (Someone said: Prajapita.) No. He entered both. He entered one of the mothers who was talkative, the one who has more power of listening and narrating. In the land of India, that mother is shown to have a long tongue in its memorial. (Students: Kali[20].) It is said, isn't it? This person has a very long tongue[21]. It means that nobody can defeat her in speech. So, she was the one who listened and narrated [the visions]. Will the *foundation* of listening and narrating be called the *foundation* of the path of *bhakti* or the *foundation* of the path of knowledge? (Everyone said: The path of *bhakti*.) This *foundation* of the path of *bhakti* was laid by that soul. This is why she gets the name Jagdamba. She herself becomes Mahakali. The *foundation* of the path of *bhakti* of listening and narrating [was laid] by her and the one to whom she narrated it, the Supreme Soul Shiva entered him and laid the *foundation* of understanding and explaining.

तो समझने-समझाने को ज्ञान कहा जाता है। भक्त लोग क्या करते हैं? शास्त्र सुन लिए। दूसरों को सुनाय दिए। अर्थ को नहीं समझा। शास्त्रकार ने सुना दिया रावण को 10 शीश होते थे। तो सत वचन महाराज। हाँ, दस शीश होते थे। ये भी बुद्धि सोचने की नहीं कि दस शीश वाला पैदा होगा तो कैसे पैदा होगा? कुम्भकर्ण छह महीने सोता था। ये बुध्दि ही नहीं चलती कि अज्ञान नींद में सोने की बात है। स्थूल रूप में सोने की कोई बात ऐसी होती नहीं

[20] A title of the goddess Durga
[21] *Lambi jiibh honaa*: to be a great talker



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

है। तो ढ़ेर सारी शास्त्रों में ऐसी बातें हैं जो भक्त लोग सुनते रहते हैं, सुनाते रहते हैं, उनके अर्थ को, गुह्य रहस्य को कोई नहीं समझते। क्योंकि भगवान ही आकरके सृष्टि के आदि काल में और तमोप्रधान सृष्टि के अंत काल में आके उसका रहस्य समझाता है। तो समझने-समझाने का फाउण्डेशन परमात्मा शिव ने उस व्यक्ति में डाला, जो राम वाली आत्मा होगी, जिसे सूर्यवंशी कहा जाता है। गीता में भी लिखा हुआ है यह ज्ञान मैंने सबसे पहले किसको सुनाया? सूर्य को सुनाया। (जिज्ञासु - मैंने सुनाया...) मैंने माना शिव ने। (जिज्ञासु - माता के द्वारा।) माता ने ज्ञान सुनाया? सुनने-सुनाने को ज्ञान कहा जाता है क्या? अरे? अरे दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा माउंट आबू में जो वाणियाँ चलीं, मुरलियाँ चली हैं, वो सिर्फ सुनने-सुनाने मात्र चली है या ज्ञान चला है? ज्ञान तो मनन-चिंतन-मंथन से निकलता है। क्या? अगर जो सुनने-सुनाने वाला है, मनन-चिंतन-मंथन ही नहीं करता तो उस ज्ञान का कोई मतलब नहीं रहता। जब उस ज्ञान की गहराई में ही नहीं जाएगा, ज्ञान सागर के तल्ले में ही नहीं जाएगा तो 84 जन्मों को आत्मा कैसे पहचानेगी।

So, understanding and explaining is called knowledge. What do the devotees do? They listen to the scriptures. They narrate it to others. They do not understand the meaning. The writer of the scripture narrated that Ravan had ten heads. So, they said: *Sat vacan Maharaj* (Your words are true sir!) Yes, he had ten heads. They do not use the intellect even to think: how will someone with ten heads be born? [It is said,] Kumbhkarna used to sleep for six months. [But] it doesn't come in their intellect at all that it is about sleeping in the sleep of ignorance. It is not about sleeping physically. So, there are numerous topics like this in the scriptures that the devotees (*bhakt*) keep listening and narrating [but] do not understand their meaning, their deep secrets because God Himself comes in [the confluence of] the beginning of the world and the end of the *tamopradhaan* world and explains its secret. So, the Supreme Soul Shiva laid the *foundation* of understanding and explaining in that person, who is the soul of Ram; he is called *Suryavanshi*. It has been written in the Gita as well: whom did I narrate this knowledge first of all? To the Sun. (Student: 'I' narrated…) 'I' means Shiva... (Student: Through the mother.) Did the mother narrate knowledge? Is listening and narrating called knowledge? *Arey*! *Arey*, the vanis [i.e,] the murlis that were narrated through Dada Lekhraj Brahma in Mount Abu, were narrated just for the sake of listening and narrating or was the knowledge narrated? Knowledge emerges through thinking and churning. What? If the one, who listens and narrates, does not think and churn at all, then there is no use of that knowledge at all. If he does not go into the depth of the knowledge at all, if he does not go to the bottom of the Ocean of Knowledge at all then how will the soul recognize its 84 births?

भगवान तो आकरके पुरुषार्थ का अर्जन करने वाले अर्जुनों को 84 जन्मों का ज्ञान देते हैं क्योंकि आत्मा 84 के चक्र का पार्टधारी है। वो पार्टधारी ही कैसा जो कपड़े बदलता रहे जन्म-जन्मान्तर, शरीर रूपी वस्त्र बदलता रहे, परन्तु अपने पार्ट को ही न जानता हो? अभी हम सब बेवकूफ पार्टधारी हैं। कहते हैं हम आत्मा हैं परन्तु प्रैक्टिकल में 24 घंटे आत्मिक स्थिति नहीं रहती। देहभान में आ जाते हैं, घड़ी-घड़ी देहभान में आते हैं। इसलिए अपने जन्मों को नहीं जान सकते। तो सुनने-सुनाने का कार्य वो जगदम्बा का पार्ट बजाने वाली आत्मा के द्वारा हुआ। और समझने-समझाने का कार्य उस व्यक्ति के द्वारा हुआ जो राम वाली आत्मा



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

होती है। ज्ञान का बीजारोपण करने वाली। जिनके लिए गाया हुआ है रामराज्य। क्या? भगवान राम आते हैं तो कौनसे राज्य की स्थापना करते हैं? (सभी ने कहा - रामराज्य।) रामराज्य की स्थापना करते हैं जहाँ यथा राजा तथा प्रजा सब सुखी होते हैं। कोई दुःखी नहीं होता। अंश मात्र भी दुःखी नहीं होता। चौथाई कला में भी दुःखी आत्मा नहीं होती है। 16 कला संपन्न, सर्व गुण संपन्न, संपूर्ण अहिंसक, सब मर्यादा पुरुषोत्तम होते हैं।

God comes and gives the knowledge of the 84 births to the Arjuns who earn [the attainments through] *purushaarth* because a soul is an actor that plays [different] roles in the cycle of 84 births. What kind of an actor is he who keeps changing clothes every birth, who keeps changing the cloth like bodies, but does not know his *part* at all? Now, we all are foolish actors. We do say that we are a soul, but we do not remain in the soul conscious stage for 24 hours in practice. We become body conscious; we become body conscious again and again. This is why we cannot know our births. So, the task of listening and narrating took place through the soul playing the *part* of Jagdamba. And the task of understanding and explaining was performed through the person who is the soul of Ram. He is the one who sows the seed of knowledge. It is famous about him: *Ram rajya* (kingdom of Ram). What? When God Ram comes, which kingdom does he establish? (Everyone said: The kingdom of Ram.) He establishes the kingdom of Ram where, as the king, so are the subjects; everyone is happy. Nobody is unhappy. No one experiences sorrow even a little. The soul does not experience sorrow even to the extent of $1/4^{th}$ celestial degree. Everyone is complete with 16 celestial degrees, perfect with all the virtues, completely non-violent and *maryaadaa purushottam*[22].

तो ऐसी राम वाली आत्मा के द्वारा अंतिम जनम में वो ज्ञान का बीजारोपण करते हैं परमपिता परमात्मा शिव। समझने और समझाने का फाउण्डेशन होता है। परन्तु जो दूसरी दो माताएं हैं उनमें जो सुनने-सुनाने वाली है वो समझती है अन्दर से या जो दूसरी माता मौन रहने वाली है वो समझती है? (सभी ने कहा - जो मौन रहती है।) जो मौन रहने वाली है वो ही समझती है। इसलिए मुरली में बोला है जो भारतवासी होते हैं उनको सरेण्डर होने में हृदय विदीर्ण होता है। और जो विदेशियों से प्रभावित होने वाले, विदेशी होते हैं वो झट सरेण्डर हो जाते हैं बिना सोचे समझे। तो दोनों माताओं में अगला जन्म लेकरके, जो अगला जन्म होता है वो भी ब्राह्मण परिवार में ही होगा या कहीं दूसरा होगा? (जिज्ञासु - ब्राह्मण परिवार में।) गीता में तो लिखा है ये ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता। तो ब्राह्मण जो बना ब्रह्मा मुख की संतान वो अगर शरीर भी छोड़ दे तो अगला जन्म लेकरके फिर ब्राह्मण बनता है। पूर्व जन्म की जो प्रारब्ध है पुरुषार्थ की वो लेकरके आता है। उनमें से एक आत्मा, दो माताएं थीं ना। एक माता ज्ञान सुनती है तुरंत सरेण्डर हो जाती है। अपनी समझ से सरेण्डर नहीं होती। सुनाने वाले सुनाते हैं और वो सुनती है और सुनने सुनाने के आधार पर सरेण्डर हो जाती है। और जो भारत माता का पार्ट बजाने वाली है वो लंबा टाइम लगा देती है। लास्ट में जाकरके सरेण्डर होती है।

[22] Highest among the souls following the code of conduct



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

So, the Supreme Father Supreme Soul Shiva sows the seed of knowledge through the soul of Ram in the last birth. It is the *foundation* of understanding and explaining. But between the two mothers, does the mother who listens and narrates, understand [the knowledge] from within or does the other mother who remains silent understands? (Everyone said: The one who remains silent.) The one who remains silent herself understands. This is why it has been said in the murli that the heart of the Indians breaks to *surrender*. And the *videshis* (foreigners), those who are influenced by the foreigners, *surrender* immediately without thinking and understanding. So, both the mothers are born again… will they be born again in the Brahmin family itself or somewhere else? (Someone said: In the Brahmin family.) It has been written in the Gita that this knowledge is never destroyed. So, even if the one who has become a Brahmin, the progeny [born through] the mouth of Brahma leaves the body, then after being reborn he becomes a Brahmin again. He brings with him the reward of *purushaarth* made in the past birth. One of the souls between them; there were two mothers, weren't there? One mother listens to the knowledge and surrenders immediately. She does not *surrender* through her intelligence. The narrators narrate [the knowledge], she listens to it and she surrenders on the basis of listening and narrating. And the one who plays the *part* of Mother India takes a long *time*. She surrenders [herself] in the *last*.

तो ऐसे नहीं है कि जगदम्बा ही बड़ी माँ है। वास्तव में बड़ा वो है जो प्रैक्टिकल जीवन में ज्ञान को धारण करके दिखावे। तो दोनों माताओं में से प्योरिटी के ज्ञान को... ज्ञान का मुख्य उद्देश्य क्या है? प्योरिटी। प्योरिटी के प्रैक्टिकल स्वरूप को कौनसी माता प्रत्यक्ष करती है जीवन में? भारत माता। इसलिए भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। बीच में तो रुद्र माला प्रत्यक्ष होती है। उस रुद्र माला की जो मुख्य पुरुषार्थिनी स्त्री चोले वाली है वो महाकाली का पार्ट बजाने वाली है। महाकाली होगी तो अकेली होगी या साथ में महाकाल भी होगा? (सभी ने कहा - महाकाल भी होगा।) महाकाल भी होता है। महाकाल शंकर को कहा जाता है। रुद्र कहा जाता है। इसलिए रुद्र ज्ञान यज्ञ गायन है। भगवान आकरके रुद्र में प्रवेश करके जो रौद्र रूप धारण करता है। इतना रौद्र रूप धारण करता है कि सारी दुनिया का विनाश कराय देता है। किसके द्वारा? रुद्र गणों के द्वारा। वो रुद्र गण पहले बाहर की दुनिया का विनाश कराते हैं, पहले अन्दर की ब्राह्मणों की दुनिया, कुम्भकरणों और रावण की दुनिया में विनाश होता है? जो कच्चे-पक्के ब्राह्मण हैं अधूरे पक्के उनका विनाश हो जाता है। इसलिए गायन है कि प्रजापति ने यज्ञ रचा। उस यज्ञ में सति ने अपना देह स्वाहा कर दिया। वास्तव में देह स्वाहा नहीं कर दिया। देहभान स्वाहा कर दिया। आत्माभिमानी बन गई। आत्मा को ही शक्ति कहा जाता है। शिव की शक्ति जो आत्मिक स्टेज में स्थिर हो जाती है।

So, it is not that Jagdamba herself is the senior mother. Actually, the one who imbibes the knowledge in *practical* life is senior. So, between both mothers, the knowledge of *purity*... What is the main objective of knowledge? *Purity*. Which mother practices the *practical* form of *purity* in her life? Mother India. This is why [it is said]: Mother India, incarnation as *Shiv shakti*[23] is the very slogan of the end. It is the *Rudramaalaa*[24] that is revealed in the middle.

[23] Consort of Shiva
[24] Rosary of Rudra



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

The main *female purushaarthi*[25] in the *Rudramaalaa*, [the one] who has a female body plays the *part* of Mahakali. If there is Mahakali, will she be alone or will Mahaakaal[26] also be along with her? (Everyone said: There will be Mahaakaal as well.) There is Mahaakaal as well. Shankar is called Mahaakaal. He is called Rudra. This is why *Rudra Gyaan Yagya*[27] is famous. God comes, enters Rudra and takes on a fearsome form. He takes on such a fearsome form that he causes the destruction of the entire world. Through whom? Through the *Rudragan*[28]. Do those *Rudragan* cause the destruction of the outside world first or do they cause the destruction of the inside world of Brahmins, the world of Kumbhakarna, Ravan and Meghnad[29]? The destruction is brought about in the Brahmin world. The weak Brahmins, the semi-real Brahmins are destroyed. This is why it is famous that Prajapati organized a *yagya*. Sati sacrificed her body in that *yagya*. Actually, she did not sacrifice her body, she sacrificed her body consciousness. She became soul conscious. The soul itself is called *Shakti* (power), Shiva's *shakti*, who becomes constant in the soul conscious *stage*.

[25] The one who makes spiritual effort
[26] The Great Death; a title of Shankar
[27] Rudra's *yagya* of knowledge
[28] The followers of Rudra
[29] Villainous characters in the epic Ramayana



Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info